: पहला अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन तथा साहित्य : एक सामान्य परिचय

: पहला अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन तथा साहित्य : एक सामान्य परिचय

साहित्य को जानने के लिए साहित्यकार के जीवन का अध्ययन सहायक हो जाता है। साहित्यकार कितना भी तटस्थ रहना चाहे पर उसके जीवन का कुछ ना कुछ अंश उसके साहित्य में जरूर आता है। अश्कजी भी इसके लिए अपवाद नहीं रहे हैं। पारिवारिक झगडे, परिस्थितियों की विकटता तथा समाज के जुल्म आदि को उन्होंने अपने साहित्य का विषय बनाया है। अश्कजी मध्यवर्ग, विशेषतः निम्नमध्यवर्ग के जीवन का चित्रण करने में कुशल है। शिवपुजन सहाय उनके साहित्य के बारे में कहते हैं - "जब वे साहित्य की रचना करते हैं तब उनकी बहुमुखी प्रतिभा सदा जनता के जीवन और मनोभाव की अनुगामिनी रहती है।"[१]

उनके पूरे साहित्य में हमें मध्यवर्गीय समाज का प्रतिबिंब नजर आता है। उन्होंने मध्यवर्ग की समस्याओं को हमदर्दी से समझा, परखा और अपने साहित्य में उजागर किया है। यहाँ हम अश्कजी के जीवन परिचय का अध्ययन आवश्यक मानते हैं।

१.१ जीवन परिचय :

१:१:१ जन्म तथा बचपन :-

उपेंद्रनाथ अश्क जी का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर नामक नगर में १४ दिसंबर, १९१० को हुआ। अश्क भारद्वाज गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थें। उनका जन्म नाम इन्द्रनारायण था, पर उनके पिता को यह पसंद नहीं आया और उन्होंने पूर्वनिश्चयानुसार उनका नाम उपेन्द्रनाथ रखा। अश्कजी अपने छः भाईयों में दूसरे थें।

अश्कजी का बचपन दुःखमय और पारिवारिक कलहपूर्ण वातावरण में बीता। छोटी उम्र में ही उन्हें अपनी रोजीरोटी कमानी पड़ी। अश्क के पीता पं.माधोराम स्टेशनमास्टर

१. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ-१९

थे। उन्हें शराब पीने और घर से बेपरवाह रहने की आदत थी। राजेन्द्रसिंह बेदी उनके पिता के बारें में कहते हैं - "वे घर की ओर रूख भी करते तो डाँट-फटकार और मार-पीट के लिए बीवी से लड़ रहे हैं, उस पर गरज रहे हैं, या कि बच्चे को उल्टा लटकाकर उसे बेदर्दी से पीट रहे हैं।"[१]

इन सबके बावजूद अश्क अपनी तरक्की में पिता की सलाह महत्वपूर्ण मानते थें। किसी भी कार्य में एकनिष्ठ होकर जुट जाने की सलाह वे हमेशा देते थें। कोई भी काम करना है तो उसमें कमाल तक पहुँच जाना चाहिए ऐसा उनका कहना था। इसी कारण पिता ने दी हुई जीवनदृष्टि उन्हें कामयाब बनाने में अधिक सहायक हुई। श्रीमती वाजिदा तबस्सुम को दिये गये साक्षात्कार में अश्कजी अपने पिता के बारे में कहते हैं "खुद तो कुछ नहीं कर पाये, लेकिन मुझे बना गये।.....यह जो मैं बार-बार लिखता हूँ, बेपनाह मेहनत करता हूँ, उन्हीं की नसीहत के कारण।"[२]

पिता के विपरीत अश्क की माँ, गाय जैसी प्रकृतिवाली एक सीधी और पतिव्रता नारी थी। अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए गमों को झेलकर उसने अपने बच्चों को पढ़ाया। अपना कर्तव्य निभाकर अश्क के बचपन को सँवारने में उनकी माँ भी सहायक हुई है। इसीतरह अश्कजी का बचपन गरीबी और मुसीबतों का सामना करते हुए अत्यंत साधारण परिवार में बीता।

१:१:२ <u>शिक्षा</u> :-

बचपन में स्कूल जाने से पहले उन्होंने अपने पिता से घर पर ही शिक्षा प्राप्त की। पाँच वर्ष की आयु में उन्हें संस्कृत के श्लोक कंठस्थ थे। आठ वर्ष की आयु तक अश्कजी अपने पिता के साथ हिसार, सैलाखुर्द और बगवाना आदि स्टेशनों पर घुमते रहें।

सन १९१९ में जालन्धर की एक पाठशाला में उन्होंने तीसरी कक्षा में प्रवेश लिया। सन १९२६ में उनकी "तूफाने अश्क" ये पद्यरचना पहली बार प्रकाशित हुई।

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क   अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व   पृ.३१

२. संकलन - कौशल्या अश्क   साक्षात्कार और विचार   पृ.१५६

सन १९२७ में अश्कजी मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये। सन १९३१ तक उनकी कुछ गज़ले तथा कहानीसंग्रह प्रकाशित हो गये। सन १९३१ में बी.ए. की परीक्षा वे तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये। जीवकोपार्जन की समस्या के कारण बी.ए. पास होते ही उन्होंने अपने ही स्कूल में अध्यापक की नौकरी की। कुछ दिनों बाद वे प्रसिध्द उर्दू कवि श्री.मेलाराम वफा के साथ लाहौर चले गये।

सन १९३३ में अश्कजी ने "भूँचाल" नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया। साप्ताहिक "गुरूघंटाल" के लिए वे प्रति सप्ताह एक रूपये में एक कहानी लिखकर दिया करते थे। सन १९३४ में अश्कजी ने लॉ कालेज में प्रवेश लिया। इसी बीच उनकी पहली पत्नी शीला टी.बी. से बीमार हो गयी फिर भी अथक परिश्रम से सन १९३६ में अश्कजी एल.एल.बी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये। सात सौ छात्रों में वे सातवे नंबर पर थें। आगे उनकी पत्नी शीला का ११ दिसंबर, १९३६ को देहांत हो गया और उनका जज बनने का सारा उत्साह चला गया। अश्कजी ने कानून की सब किताबे बेच डाली और वे स्वतंत्र रूप से साहित्य-सृजन करने लगे।

१:१:३ विवाह :-

अश्कजी का पहला विवाह सन १९३२ में शीलादेवी के साथ हुआ। उनकी पत्नी गेहुएँ रंग की, हमेशा खिलखिलाकर हँसनेवाली, ग्रामीण और अशिक्षित लड़की थीं। चार वर्ष के सहचर्य से अश्कजी उसे बहुत चाहने लगे थे परंतु नियती को शायद ये मंजूर नहीं था। अचानक वह यक्ष्मा से ग्रस्त हो गई। अश्क ने अथक परिश्रम से उसकी बहुत सेवा की पर ११ दिसंबर,१९३६ को वह पति और बेटा उमेश को छोड़कर सदा के लिए चल बसी। राजेन्द्रसिंह बेदी के साथ हुए वार्तालाप के समय अश्कजी एक कविता में कहते हैं -

"चल दोगी कुटिया सुनी कर
इसी घड़ी इस याम
युग-युग तक जलते रहने का
मुझे सौंप कर काम।"[१]

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ.३७

कविता की इन पंक्तियों से उनका पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट हो जाता है। पत्नी की मृत्यु के बाद निराश होकर वे साहित्य-सृजन करने लगे। उन्होंने चार-पाँच वर्ष तक शादी नहीं की। समाज की लांछना ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और तंग आकर उन्होंने बड़े भाई को शादी तय करने के लिए खत लिखा। उनके भाई ने दूर के रिश्ते में उनकी शादी पक्की कर दी। शांत होने पर वे जान गये कि उनसे गलती हो गयी है। सगाई तोड़ने के लिए उन्होंने भाई को खत लिखा। ऐसी विचित्र स्थिति में अश्कजी का कौशल्या से परिचय हुआ। अश्कजी चाहते थें कि कौशल्या से वे चुपचाप शादी करेंगे तो भाई द्वारा पक्की की शादी टूट जायेगी, पर कौशल्याजी ने इस बात के लिए विरोध किया। इसी असंमजस की स्थिति में फरवरी १९४१ में अश्कजी ने माया से अनिच्छापूर्वक दूसरी शादी की। दूसरी पत्नी के साथ अश्कजी की नहीं बन सकी। एक महीने के दिखावटी जीवन से अश्कजी ऊब गये और उन्होंने दूसरी पत्नी का त्याग कर १२ सितम्बर, १९४१ को कौशल्याजी से तीसरा विवाह किया।

जीवन में अनेक मुसीबतों को झेलते हुए वे थक गए थे। ऐसी स्थिति में उनकी तीसरी पत्नी कौशल्या ने उन्हें सहारा दिया। आर्थिक, सामाजिक और साहित्यिक संघर्ष से जिस चोटी पर अश्कजी पहुँच गये थे, उसमें कौशल्याजी के प्रयत्नों का हिस्सा अधिक हैं। रवीन्द्र श्रीवास्तव के साक्षात्कार को उत्तर देते वक्त अश्कजी कौशल्या के बारे में कहते हैं - "पत्नी बहुत पढ़ी-लिखी, समझदार, प्रबल इच्छा-शक्तिवाली ......निकली।"[१]

अश्कजी सन १९४६ में क्षयरोग से ग्रस्त हो गये तब कौशल्याजी उन्हें मौत के मुँह से बचाकर वापस लाने में सफल हो गयी। केन्द्रीय सरकार से ऋण लेकर सन १९४९ में उन्होंने "नीलाभ प्रकाशन" की स्थापना की। आज हम "नीलाभ प्रकाशन" लोकप्रियता की जिस उँचाई पर देखते हैं वह सब कौशल्याजी के प्रयत्नों का फल है। कौशल्याजी सच्चे अर्थ में अश्कजी की सहायक,साथी,सहयोगी मित्र, प्रेमिका, प्रशंसक, आलोचक और सफल पत्नी के रूप में हमारे सामने आती हैं।

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ-२३८

१:१:४ <u>जीवन - संघर्ष</u> :-

बचपन से ही अश्कजी का जीवन संघर्षमय रहा है। शिक्षा स्वास्थ्य, जीविका, घर तथा साहित्य सभी जगह उन्हें संघर्ष करना पड़ा है।

कई बार फीस के लिए तथा किताबों के लिए उनके पास पैसे नहीं होते थें। रवीन्द्र श्रीवास्तवजी के प्रश्न को उत्तर देते हुए अश्कजी कहते हैं - "मैंने हमेशा पुस्तक विक्रेताओं से दोस्ती बनाये रखी और दूकानों के पिछले हिस्सो में बैठकर अध्ययन किया, ...मैट्रिक तक नगे पाँव स्कूल जाता रहा ......दूर्बल स्वास्थ्य के बावजूद एक बरस तक तीन-साढ़े-तीन मील पैदल चलकर कालेज जाता रहा हूँ।"[१] बी.ए.होने के बाद कुछ दिनों तक वे अध्यापक का काम करते रहे। जरूरत पड़ने पर उन्होंने अखबार बेचे, विज्ञापन बाँटे इतनाही नहीं, एल.एल.बी. होने के बाद भी भाई की दुकान में झाडू भी लगाया है।

उनके अनेक सपने थें - अध्यापक बनने का, वक्ता बनने का, फिल्म में काम करने का तथा वकील बनने का। इन सपनों को उन्होंने संघर्ष से साकार कर दिखाया। हर एक चीज का उन्होंने अनुभव लिया पर साहित्य-सृजन में जो आनंद, सुख उन्हें प्राप्त हुआ वह और किसी चीज में नहीं मिला।

भैरवप्रसाद गुप्त उनके बारे में कहते हैं कि अश्क आपसे साफ-साफ कह देंगे कि "उनकी कल्पना वैसी प्रखर नहीं; मूड़ के वे गुलाम नहीं; कोई दैवी हाथ उनकी कलम नहीं चलाता और जन्मजात प्रतिभा उनमें थी नहीं। जीवन भर उन्होंने संघर्ष किया है......और स्वयं ही हाथ-पाँव मारकर उन्होंने तैरना सीखा है।"[२]

सन १९३५ में जब डॉक्टरो ने उनकी पहली पत्नी शीला को यक्ष्मा है ऐसा संदेह प्रकट किया तब भी अश्कजी ने हार नहीं मानी। उन्होंने पत्नी को शहर से दूर गुलाबदेवी अस्पताल में भरती करा दिया। तब वे कानून की पढ़ाई करते थे। दिनभर साहित्यिक काम, कालेज की पढ़ाई, टयूशन लेते और रात को अध्ययन-मनन करते थें। हफ्ते में दो-तीन

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ.२३६

२. संकलन - कौशल्या अश्क नाटककार अश्क पृ.४६१

बार पत्नी से मिलने भी जाते थे। इतने श्रम और तपस्या के उपरांत भी पत्नी का देहांत हो गया। परंतु अंत तक अश्क परिस्थिति से लड़ते रहें।

जनवरी,१९४५ में अश्क बम्बई चले गये और वहाँ उन्होंने फिल्मों के लिए संवाद लिखने का काम किया। नीति बोस की फिल्म "मजदूर" और अशोककुमार की फिल्म "आठ दिन" में उन्होंने अभिनय किया। बचपन की अभिलाषा कुछ हद तक सफल जरूर हुई परंतु वास्तविकता के कटु अनुभवों के कारण उन्होंने बम्बई को छोड़ दिया। वहाँ से निकलते ही दिसम्बर,१९४६ में उन्हें यक्ष्मा हो गया। जल्दही उनकी पत्नी कौशल्याने उन्हें पंचगनी के सेनेटोरियम में भरती किया। उन दिनों में टी.बी. का कोई खास इलाज नहीं था। फिर भी अश्कजी ने जिद नहीं छोड़ी, वे निरंतर साहित्य-सृजन करते रहें। कमजोर होवे हुए भी अपने रोग से दाँत पीसकर वे कहते थे "साले मैं तुम्हें हराकर दम लूँगा, ...मैं तेरा तिया पाँचा कर दूँगा, मुझे मारना आसान नहीं।"[१] बीमारी की दशा में सेनेटोरियम में होते हुए भी अश्कजी ने "तूफान से पहले" यह एकांकी संग्रह तथा "दीप जलेगा" ये लम्बी कविता लिखी। अपने लक्ष्य के मार्ग में बीमारी को भी उन्होंने बाधा के बजाय सुविधा के रूप में ग्रहण किया क्योंकि निराशा के क्षणों में भी वे निरंतर साहित्य-सृजन करते रहे। बीमारी में भी वे रूकना नहीं जानते थे। लिखना उनका व्यसन बन चुका था। अश्कजी को मौत के मुँह में भी हँसता देखकर बलवन्तसिंह को अज्ञातजी का एक शेर याद आता है -

"एक टूटे से मकबरे के करीब, एक हसी जूए-बार बहती है
मौत कितना ही एतराज करे, जिन्दगी बेकरार रहती है।"[२]

इस शेर का अर्थ भी उन्होंने इसप्रकार बताया है - कि एक पुरानी और टूटी हुई समाधी के निकट एक नन्हीं सी तड़पती हुई नदी बह रही है। चाहे मौत कैसे भी अपनी डरावनी आँखे चमकाये, जिन्दगी उस नन्हीं नदी की तरह खिलखिलाती, कुल्हे मटकाती और नृत्य करती आगे-ही आगे बढ़ती जाती है। उस नदी की तरह अश्कजी ने भी आखिर मौतपर विजय पायी। अर्धस्वस्थ होकर वे फिर इलाहाबाद में गये।

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क   अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व   पृ.५८

२.   - वही -   पृ.८४

उनकी पत्नी कौशल्या ने सन १९४९ में उत्तर प्रदेश तथा भारत सरकार से ब्याजपर ऋण लेकर "नीलाभ प्रकाशन" की स्थापना की। बीमारी के बाद भी जब उनका दाया फेफडा कमजोर था तब भी घर का खर्च चलाने के लिए रेडियो आदि के लिए काम भी करते थे। एक मिनट भी खाली नहीं जाने देते थे। इसी तरह अपने संघर्षमय जीवन में आये अनेक संकटों को झेलकर और परिस्थितियों का सामना करते हुए "नीलाभ प्रकाशन" आज बहुत ऊँचाई पर पहुँच गया है। उसमें उनकी पत्नी कौशल्या का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने जीवन के दुःखों को हँसते हुए सहा। गोपालप्रसाद व्यास उनके बारे में कहते हैं " जो वेदना को पी सकता है, वही हँस सकता है। जो जीवन के प्रति उसके मूल्यों के प्रति गम्भीर है, वही अवहार में हल्का-फुल्का हो सकता है। हिन्दी में इसकी एक मिसाल महादेवी है और दूसरी श्री.उपेन्द्रनाथ अश्क।"[१] इसी तरह बचपन से लेकर बुढ़ापे तक वे निरंतर जीवन से संघर्ष करते रहे।

१:१:५ <u>देहान्त</u> :-

अपने जीवन में निरन्तर संघर्ष करनेवाले अश्कजी ८५ साल की उम्र में इस दुनिया से चले गये। समकालीन साहित्य समाचार के अनुसार "हिन्दी-उर्दू के सुप्रसिध्द साहित्यकार उपेन्द्रनाथ अश्क का १९ जनवरी, १९९६ को इलाहाबाद स्थित "स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल" में निधन हो गया।"[२] वे अपना बृहत उपन्यास "गिरती दीवारे" का अंतिम खंड लिखने में कार्यरत थे। उनकी आँखे आपरेशन के बावजूद भी काम नहीं दे पाती थी, ऐसी स्थिति में एक दिन वे बाथरूम में गिर पड़े और बीमार पड़ गये। रवींद्र कालिया उनके बारे में कहते है "एक अच्छे इंसान की तरह आये और एक लेखक के रूप में परलोक सिधारे। फर्क सिर्फ इतना था कि मरते समय उनके हाथ में कलम नहीं, उनकी बांह पर जीवन-रक्षक उपकरण लगे थे। उनका चेहरा ऑक्सिजन के संयंत्रों से ढका हुआ था। उनके अवसान के साथ एक युग का अवसान हो गया। सही मायने में वे युग-पुरूष थे।"[३]

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ-१६३

२. संपादक - सत्यव्रत समकालीन साहित्य समाचार पृ-३१

३. संपादक - विश्वनाथ सचदेव धर्मयुग पृ.६७

अभी हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने हिंदी व उर्दू साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए उन्हें 'इकबाल पुरस्कार' देने की घोषणा की थी परंतू साहित्य अकादमी पुरस्कार से वंचित रखे गये "अश्कजी अंगूठा दिखाकर इसके पहले ही इस नश्वर दुनिया से विदा हो गये। फिराक, पंत, निराला और महादेवीजी की पीढ़ी का आखिरी चिराग गुल हो गया।"[१] अश्क विद्रोही थे। वे गलत धारणाओं से लड़ते रहे मगर उनके आगे कभी झूके नहीं।

१.२ <u>व्यक्तित्व</u> :-

पतले-छरहरे कद के, घुँघराले बालोंवाले अश्कजी के व्यक्तित्व के अनेक पहलू हमारे सामने आते है। वे मुक्त, मिलनसार, हँसमुख और दूसरों को अपनानेवाले इन्सान थें। अश्कजी हर प्रकार का लिबास पहनना पसंद करते थें। धोती-कुर्ता, जाकेट से लेकर सूट-बूट तक सभी प्रकार के लिबास उन्हें पसंद थे। उनका खाना-पीना बहुत सिधा-सादा और नियमित था।

सुमित्रानंदन पंत उनके बारे में कहते हैं - "वे अत्यन्त परिश्रमशील, बहुमुखी, प्रतिभावान व्यक्ति हैं और कला की अपूर्व परख रखते है। उनके गम्भीर व्यवहार-ज्ञान के साथ उनका बच्चों सा चंचल, भोला, दूसरों को अकारण छेड़कर रस लेने का स्वभाव उनकी प्रिय विशेषता है।"[२]

कभी-कभी अश्कजी में अभिनेता की झलक भी दिखाई देती थी। एक छोटी साहित्य गोष्टी में अश्कजी ने अपनी "दीप जलेगा" कविता पढ़ने के साथ-साथ मनोरंजन के लिए खोंचेवाले की आवाज भी लगायी। उनकी उस आवाज के बारे में अशोकजी लिखते हैं - "आवाज "अश्कजी" ने लगायी, यह मैं कुछ देर में समझ पाया। .....खोंचेवाले, अखबारवाले, भिन्न-भिन्न प्रकार की हँसी हँसनेवाले, रोनेवाले, रेलपर पान-बिडी बेचनेवाले आदि अनेक तरह के लोगों की हू-ब-हू नकलें सुनकर इस व्यक्ति के विषय में एक नयी बात का पता लगा कि वह कितना सफल अभिनेता है।"[३] सचमुच अश्कजी एक अभिनेता

---

१. संपादक - विश्वनाथ सचदेव धर्मयुग पृ-६७

२. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ-२२

३. - वही - पृ- ४८-४९

थे। उन्होंने नीति बोस की फिल्म "मजदूर" और अशोककुमार के फिल्म "आठ दिन" में अभिनय किया था।

अश्कजी के व्यक्तित्व में हमें जिन्दादिली भी दिखाई देती है। पचास की उम्र में भी वे सीटी बजाकर लाहौर के फेरीवालों की नकल कर कहकहे लगाते थे।

कृष्णचन्द का उनके बारे में कथन है "अगर साहित्यिक गोष्टी नहीं है और साहित्य की चर्चा से काम नहीं चल सकता तो लतीफे ही सुनाने पर उतर आयेंगे। इससे भी काम न बना तो दो आदमियों को लड़वा देंगे। इससे भी काम न चला तो भरी महफिल में उठकर बे-मतलब एक जोर का ठहाका लगा देंगे।"[१] इससे स्पष्ट है कि जिन्दादिली उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण अंग था।

अश्कजी मिलनसार और उम्र के बंधन को न मानकर नये लोगों से मिलनेवाले अच्छे सलाहकार भी थे। राजेंद्र यादवजी उनके बारे में कहते हैं "शायद अपनी पीढ़ी में वे ही अकेले ऐसे लेखक हैं जो उम्र और अवस्था की सारी दीवारें तोड़कर नये-से-नये लेखक से उसी धरातल पर मिल सकते हैं, उसके कन्धें पर हाथ मारकर हँसी-मजाक कर सकते हैं और समान मित्र की तरह सलाह दे सकते हैं। इसलिए भय या श्रध्दा के स्थान पर एक अजब आत्मीयता का संबन्ध फौरन स्थापित कर लेते हैं।"[२]

बीमार होते हुए भी उन्होंने लिखना कभी छोडा नहीं। अस्त होते हुए भी बोलने बैठ गये तो घंटों वही बैठते थें। भूतपूर्व मित्रों ने उन्हें बहुत चोट पहुँचायी, फिर भी हर नये मित्र से संम्पर्क के लिए तैयार रहते थे। अनेक कटु अनुभवों से घायल होते हुए भी हमेशा दिल खोलकर हँसते रहते थे। अपनी उदासी के क्षणों में वे चुटकुलों अथवा अपनी विनोदवृत्ति से लोगों का मन बहलाते थे।

प्रीतनगर वासियों के त्यौहार में जब अश्कजी शामिल हुए तब अपने बायें होठें पर उल्टा हाथ रखकर उन्होंने नवजात पिल्लों के रूदन की नकल सुनायी, जिसे सुनकर

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क   अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व   पृ.५७

२.   - वही -   पृ.६५

लोग जोर से हँसने लगे। तबसे जब भी प्रितनगर के लोग उन्हें चायपर बुलाते तो उनकी कविता या कहानी सुनने की अपेक्षा उनसे कहते "अशक जी जरा ओ कुत्ते दी बोली ताँ सुनाओ।"[१] इस कथन से अश्कजी में विनोदवृत्ति भी कुट-कुटकर भरी दिखाई देती है। वे हमेशा अपने में बसे साहित्यकार को भूल जाते और सामान्य लोगों में शामिल होकर उनका मनोरंजन करने लगते थे।

संघर्षपूर्ण जीवन में हमेशा वे एक नायक की तरह पूरा जीवन जीये है। भैरवप्रसाद गुप्त का उनके बारे में कथन है "उनके जीवन और व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह नायकत्व ही है।"[२]

अश्क के व्यक्तित्व में चंचलता भी थी। अश्कजी के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए श्रीमती कौशल्या अश्क ने लिखा है "अश्क जी का स्वभाव ऐसे शान्तिप्रिय व्यक्ति का-सा नहीं, जो पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर उस पर डेरा डाल दे, बल्कि ऐसे चंचल राही-सा है, जिसको कभी पहाड़ के शिखर पसन्द हैं, कभी गहरी घाटियाँ, जो कभी जनसंकुल नगरों को पसन्द करता है और कभी निर्जन वीरानों में जा रमता है। पराकाष्ठाएँ उसे पसन्द हैं, कोई एक सीमा-रेखा और मध्य का मार्ग उसे रूचिकर नहीं।"[३]

अश्क जी बहुत जिद्दी भी थे। जान बुझकर अगर कोई अपनी उपेक्षा करने का प्रयत्न कर रहा है तो वे विरोधी को बात मनवाकर उसे झुका न ले तब तक चैन से नहीं बैठते थे। उनके इस स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए कृष्णचन्द कहते है - "मैंने ऐसा जिद्दी, मुस्तलिक-मिजाज धुन का पक्का साहित्यकार बहुत कम देखा है।"[४]
अश्कजी के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह भी थी कि वे एक अच्छे मददगार थे। मृत्यू के एक वर्ष पहले बीमार अवस्था में भी उन्होंने मेरे छोटेसे पत्र का बहुत लम्बा जवाब दिया। वे अपने खत में लिखते हैं "जिंदगी में पहली बार देश में रहनेवाले किसी

---

१. संकलन-कौशल्या अश्क — अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व — पृ-१११

२. संकलन - कौशल्या अश्क — नाटककार अश्क — पृ-४६२

३. संकलन - कौशल्या अश्क — अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व — पृ-११६

४. - वही - — पृ- ५८

शोध-छात्र को इतना लम्बा पत्र लिखा।"[१] वे यह भी लिखते हैं "तुमने एम.फिल. किया है। मेरे नाटकों पर पी.एच.डी. करो तो पढ़ना, प्रश्न बनाना, जिंदा रहा तो आना & यहाँ रहना तब Discus करूँगा।"[२] लेकिन मेरे दुर्भाग्यवश वे जल्दही इस दुनिया से चले गये। उनका अपने हस्ताक्षर में लिखा पत्र उनके अच्छे मददगार रूप को सामने लाता है।

अश्कजी में प्रबल इच्छाशक्ति और लगन होने से कठिन परिस्थिति में भी उन्होंने संघर्ष किया इसी कारण उनका व्यक्तित्व दिलचस्प और बहुगुणों से युक्त दिखाई देता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क परिशिष्ट क्रं १ पृ - १४८

२. - वही - पृ - १४८

१.३ साहित्य :-

साहित्यकार का मुख्य दायित्व यह होता है कि वह युग का पथ-प्रदर्शन करें और उस तरह के साहित्य का निर्माण करें। अश्कजी ने भी समाज की विभिन्न समस्याओं को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। साहित्य के केवल एकही नहीं बल्कि बहुविध अंगों पर उन्होंने प्रकाश डाला हैं। साहित्य के उपन्यास, एकांकी, नाटक, कहानी, काव्य, अनुवाद, संस्मरण आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने सफलता पायी है। आज हिंदी साहित्य के उच्चकोटी के साहित्यकारो में उनका नाम लिया जाता हैं। उनके द्वारा लिखा साहित्य इस प्रकार प्राप्त होता है।

१:३:१ नाटक साहित्य :-

		प्रकाशन-संस्करण
जय-पराजय।	सन	१९३७
स्वर्ग की झलक।	सन	१९३८
छठा बेटा।	सन	१९४०
कैद और उड़ान।	सन	१९५०
पैंतरे।	सन	१९५३
अलग-अलग रास्ते।	सन	१९५४
अंजोदीदी।	सन	१९५५
भँवर।	सन	१९६१
बड़े खिलाड़ी।	सन	१९६७

१:३:२ एकांकी साहित्य :-

मुखड़ा बदल गया।

पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी।

पर्दा उठाओ : पर्दा गिराओ।

साहब को जुकाम है।

तूफान से पहले।

चारवाहे।

देवताओं की छाया में।

अन्धी गली।

पापी।

लक्ष्मी का स्वागत।

अधिकार का रक्षक।

सूखी डाली।

कामदा।

मैमूना।

नया-पुराना।

बहनें।

चिलमन।

चुम्बक।

तौलिये।

पक्का गाना।

कइसा साब : कइसी आया।

बतसिया।

कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्‌घाटन।

मस्केबाजों का स्वर्ग।

१:३:३ उपन्यास साहित्य :-

गिरती दीवारें।

शहर में घूमता आईना।

एक नन्हीं किन्दील।

निमिषा।

बांधो न नाव इस ठाँव।

पलटती धारा।

छोटे बड़े लोग।

चन्द्रा।

गर्म राख।

एक रात का नरक।

चेतन-संक्षिप्त।

बड़ी-बड़ी आँखे।

संघर्ष का सत्य।

पत्थर-अलपत्थर।

सितारें का खेल।

नन्ही-सी लौ।

१:३:४ <u>कहानी साहित्य</u> :-

उबाल और अन्य कहानियाँ।

सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ।

छींटे।

जुदाई की शाम का गीत।

काले साहब।

बैंगन का पौधा।

आकाशचारी।

कहानी लेखिका और जेहलस के सात पुल।

अश्क की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ।

पलँग।

पिंजरा।

निशानियाँ।

दो धारा।

रौबदाब।

वासना के स्वर।

१:३:५ <u>काव्य</u> :-

स्वर्ग एक तलघर है।

अदृश्य नदी।

पीली चोंचवाली चिड़िया के नाम।

सड़कों के ढले साये।

खोया हुआ प्रभामण्डल।

दीप जलेगा।

चाँदनी रात और अजगर।

बरगद की बेटी।

१:३:६ <u>संस्मरण; जीवनी</u> :-

बेदीः मेरा हमदम मेरा दोस्त।

चेहरे : अनेक। (एक से पाँच खण्ड)

मण्टो : मेरा दुश्मन।

ज्यादा अपनी : कम परायी।

आस्माँ और भी है।

१:३:७ <u>अनुवाद</u> :-

ये आदमी : ये चूहे (उपन्यास)

लम्बे दिन की यात्रा : रातमें (नाटक)

अभिशप्त। (नाटक)

१:३:८ <u>सम्पादन, संकलन</u>

संकेत।

तूफानी लहरों में हँसता माँझी।

उदास फूल की मुस्कान।

१:३:९ आलोचना :-

हिन्दी कहाँनियाँ और फैशन।

अन्वेषण की सहयात्रा।

उपर्युक्त साहित्य को देखने से स्पष्ट होता है कि अश्कजी ने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया है। अतः उनको बहुमुखी प्रतिभा के धनि कहना गलत नहीं होगा।

१.४ अश्क के जीवन का साहित्य से संबंध :-

अश्क के साहित्यपर उनके जीवन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। अश्क पूर्ण रूप से साहित्यकार थें। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी का अभूतपूर्व चमत्कार दिखाया है। जिस समाज में उनके व्यक्तित्व का विकास हुआ है उसी परिवेश के यथार्थ को उन्होंने अपनी कृतियों में स्थान दिया है। यथार्थवादी साहित्यकार जीवन के अनेकविध रूपों से परिचित होता है। अश्क ने भी जीवन के सुख-दुःख, कर्म-अकर्म को अपने साहित्य में इसप्रकार चित्रित किया है कि वह जीवन के प्रति न्याय कर सके।

अश्कजी स्वयं मध्यवर्ग के थे। इसी कारण उन्होंने मध्यवर्ग के लोगों की वेदनाओं को भली-भाँति जाना। "मैं किसके लिए लिखता हूँ" शीर्षक निबंध में उन्होंने लिखा है - "मैं किसान मजदूरों के बारें में ज्यादा नहीं लिख सका। मैं निम्नमध्यवर्ग में पैदा हुआ, पला और बढ़ा और इसी वर्ग का चरित्र-चित्रण मैंने अपनी कृतियों में अधिकांशता किया है। बिना किसी व्यक्ति अथवा वर्ग का पूरा ज्ञान प्राप्त किये, साहित्य-सर्जना मेरे ख्याल में बद-दयानती है। लेखक जहाँ है, जिस वर्ग में है, जिस प्रदेश में है, जिसका पूरा ज्ञान उसे प्राप्त है, उसी वर्ग, समाज और प्रदेश को जन-कल्याण और जन-सुख के हेतु उसे अपने साहित्य में चित्रित करना चाहिए, ऐसी मेरी धारणा है। यदि लेखक किसानों और मजदूरों से उठा है अथवा उनमें रहता है तो उन्हें छोड़कर उच्च वर्ग का चित्रण उसके लिए गलत होगा। इसी तरह उच्चवर्ग के साहित्यिक के लिए बिना निम्नवर्ग की परिस्थितियों का पूरा ज्ञान किये, केवल बौध्दिक सहानुभूति के बल पर उनका चित्रण करना ठीक न होगा और उसके साहित्य में वह गुण न आयेगा जो अनुभूति के सच्चे और खरेपन से पैदा होता है।"[१]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क ज्यादा अपनी कम परायी पृ.२५

अश्क ने अपने जीवन के अनुभवों को, उसकी सच्चाई को अपने साहित्य में उजागर किया है। वे कहते हैं "मैं सदा इस बात की कोशिश करता हूँ कि अनुभूतियों की सच्चाई और खरेपन तथा कला और शिल्प की सौष्ठवता के साथ अपने वर्ग और समाज का चित्रण करूँ - समाज के हित और कल्याण के लिए - मेरी कृति आज से सौ वर्ष बाद जिन्दा रहेगी या नहीं इसकी चिन्ता मैं नहीं करता।"[१] स्पष्ट है कि अश्कजी वर्तमान से जुड़े लेखक है।

अपने लेखन के विषय में वे ईमानदार रहे। वे अपने निकट सम्बन्धी तथा खुद अपनी किसी कमजोरी पर लेखन करने में भी कभी हिंचकिचाते नहीं थें। उनका "गिरती दीवारें" उपन्यास एक तरह से उनके जीवन का ही चित्रण माना जा सकता है। "राजेन्द्रसिंह बेदी" कहते हैं "उपन्यास गिरती दीवारे....जिसे अश्क की अर्ध-जीवनी भी कहा जा सकता है और जो उसका सबसे बड़ा कारनामा है।"[२]

"गिरती दीवारें" के बारे में खुद अश्कजी ख्वाजा अहमद अब्बास से कहते हैं "जवानी में मेरे जैसे मध्यवर्गीय निराशावादी होते हैं। तुम मेरे नावेल का मसौदा पढ़ो। इसका बहुतसा हिस्सा आपबीती है।"[३]

अश्क ने केवल मध्यवर्गीय समाज के अनुभवों को ही नहीं बल्कि अपनी निजी बातों को भी अपने साहित्य में स्पष्ट किया है।

यक्ष्मा से बीमार होते हुए भी सेनेटोरियम में उन्होंने "तूफान से पहले" यह एकांकी संग्रह लिखा। उसी अवस्था के कुछ उदास क्षणों का चित्रण उसमें आ गया है।

अश्कजी की विशेषता यह है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह निजी अनुभवों के आधारपर लिखा है। सामान्य जीवन की चलती-फिरती बातें ही उनके साहित्य का विषय होती थी। वे खुद कहते हैं "आप-बीती अथवा "जग-बीती" को नाटकों का रूप देता रहता हूँ।"[४]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क ज्यादा अपनी कम परायी पृ-९५
२. संकलन - कौशल्या अश्क अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व पृ-३५
३. - वही - पृ-९९
४. संकलन - कौशल्या अश्क नाटककार अश्क पृ-३५२

अश्क के पूरे साहित्य में हमे मध्यवर्ग का चित्रण नजर आता है। उनके कथा साहित्य में भारतीय मध्यवर्ग का व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवनही अधिक है। उनकी कहानियों पर भी उनके सामाजिक चिन्तन की गहरी छाप दिखाई देती है। उनके उपन्यासों में भी सामाजिक चित्रण है। नाटक और कहानी में उनका प्रगतिशील और सामाजिक दृष्टिकोण दिखाई देता है। उनके उपन्यासों में जीवन के अनुभवों की वर्णनात्मकता और कविता तथा एकांकियों में मध्यवर्ग का चित्रण है।

अश्क के साहित्य पर लोक-साहित्य का भी प्रभाव दिखाई देता है। वे कहते है "मेरे उपन्यासों, नाटकों, कहानियों में पँजाब के लोकगितों और मुहावरों का प्रभाव तुम देख सकती हो। मैं लोक-साहित्य के प्रभाव को साहित्य की सहजता के लिए आवश्यक मानता हूँ।"[१]

अश्कजी के साहित्य में युग-जीवन का चित्रण नजर आता है। जो देखा है, भोगा है उस मध्यवर्गीय जीवन का संघर्ष ही उनकी रचनाओं का केन्द्रीय विषय रहा है।

१:४:१ <u>निष्कर्ष</u> :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अश्कजी का बचपन अत्यंत साधारण परिवार में मुसीबतों का सामना करते हुए बीता। पिता के बेपरवाह रहने से शिक्षा के साथ उन्हें अनेक नौकरियाँ भी करनी पड़ी मगर वे अपना स्वाभिमान खोये बिना अनेक समस्याओं के साथ जुझते रहें। यक्ष्मा जैसे रोग से ग्रस्त होने पर भी वे साहित्य-सृजन करते रहे। पत्नी कौशल्या का बीमारी की अवस्था में अश्क का साथ देकर उनके जीवन के पथ को प्रशस्त करने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का पग-पग पर संघर्ष करते हुए मृत्यु तक एक सफल साहित्यिक के रूप में उन्होंने हिंदी जगत में अपना अलग स्थान प्रस्थापित किया। इसी कारण उनका व्यक्तित्व दिलचस्प और बहुगुणों से युक्त दिखाई देता है। वे हिन्दी के प्रतिभावान, अग्रणी साहित्यकार, प्रख्यात उपन्यासकार, कहानीकार एवं रंगमंच दृष्टि से सफल नाटककार थे। उपन्यास, कहानी, नाटक और एकांकी आदि

---

१. संकलन - कौशल्या अश्क साक्षात्कार और विचार पृ- १३६

में वे विशेष प्रसिध्द रहे। शायद ही कोई ऐसी विधा होगी जिसपर अश्कजी की लेखनी निर्बाध गति से न चली हो। केवल उपन्यास, कहानी, नाटक और एकांकी ही नहीं बल्कि काव्य, निबंध, अनुवाद, संस्मरण आदि विधाओं में अपनी लेखनी का कमाल दिखाने के साथ-साथ उन्होंने संपादन कार्य भी किया है। इसप्रकार साहित्य के हर क्षेत्र पर प्रकाश डालकर उन्होंने अपने कृतित्व की पहचान दी है। वे बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यिक साबित हुए हैं।

-o-o-o-o-